कोंकणी साहित्य - 2008

प्रो. रवीन्द्रनाथ मिश्र

पुर्तगीज शासन से मुक्ति के पश्चात गोवा में कला, साहित्य और संस्कृति के समुचित विकास का उनमुक्त द्वार खुला। जिसे भारत सरकार, गोवा सरकार और साहित्य अकादमी का भरपूर सहयोग मिला। 1961 के पूर्व पुर्तगाली शासन होने के कारण यहां की भाषाई जमीनी सोच-समझ को पूर्णरूपसे पनपने का अवसर नहीं मिला, ब्रिटिश शासन की भांति गोवा में भी पुर्तगालियों की दमन नीति व्यापक पैमाने पर थी। शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी सीमित स्तर पर था। पुर्तगीज और अंग्रेजी भाषा साहित्य को विशेष महत्व दिया जाता था। महाराष्ट्र की सीमा से लगे होने एवं पारस्परिक संबंध के कारण यहां की शिक्षा और संस्कृति पर मराठी भाषा और साहित्य का प्रभाव व्यापक रूप से था। कोंकणी आम जनता में बोली जाती थी। उसका साहित्य समृद्ध था लेकिन उसमें अपेक्षित वृद्धि नहीं हो सकी। उस समय कोंकणी भाषा और लिपि के कई रूप प्रचलित थे जोकि आज भी हैं। गोवा में कोंकणी देवनागरी एवं रोमन लिपियों में लिखी जाती है।

उत्तर गोवा और दक्षिण गोवा, दो भागों में बंटा हुआ यह प्रांत भाषा और संस्कृति के प्रभाव की दृष्टि से भी विभाजित है। महाराष्ट्र की सीमा से लगा हुआ उत्तर गोवा मराठी भाषा और संस्कृति तथा समुद्र की पट्टी से जुडा हुआ दक्षिण गोवा कोंकणी भाषा और संस्कृति से अधिक प्रभावित है। गोवा मुक्ति के इतने वर्षों बाद भी मराठी भाषा, संस्कृति का प्रभाव अब भी यहां व्यापक रूप से है। कोंकणी भाषा और साहित्य अपनी जमीनी अस्मिता के कारण दिन प्रतिदिन पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है।

गोवा मुक्ति के पूर्व वामन रघुनाथ वर्दे वालावलकर (शणै गोंयबाब) ने कोंकणी भाषा और साहित्य के

लिए ऐतिहासिक कार्य किया। इन्होंने कोंकणी की लगभग सभी विधाओं पर कार्य किया। शणै गोंयबाब को उनके विशिष्ट योगदान के कारण उन्हें कोंकणी भाषा और साहित्य का जनक कहा जाता है। इनके अतिरिक्त र. वि. पंडित (कविता), वि. स. सुखठणकर (निबंध), बा. भ. बोरकार 'बाकीबाब' (कविता), लक्ष्मणराव सरदेसाय (कथा एवं ललित निबंध), शंकर भाण्डारी (काव्य एवं निबंध), पांडुरंग भांगी (काव्य), शंकर रामाणी (कविता), मनोहरराय सरदेसाय (कविता), रा. ना. नायक (चरित्र), रवींन्द्र केळेकार (ललित निबंध), चंद्रकांत केणी (कथा साहित्य एवं निबंध), नागेश करमली (कविता), चा. फ्रा. डिकोस्ता (नाटक एवं काव्य) आदि कोंकणी रचनाकारों ने भी गोवा मुक्ति के पूर्व और बाद में कोंकणी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज गोवा को आजादी मिले लगभग 50 वर्ष होने जा रहे है। अब यह प्रांत देश की मुख्यधारा से जुडकर बहुमुखी विकास की दिशा में अग्रसर है।

इक्कीसवीं सदी के विगत सात वर्षों में कोंकणी भाषा और साहित्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई है। इस संदर्भ में मैंने विगत कतिपय वर्षों के कोंकणी साहित्य पर आधारित सर्वेक्षण लेख वार्षिकी के लिए लिखा है। उनमें से अधिकांश का प्रकाशन भी हो चुका है। उन लेखों में कोंकणी की तीन पीढियों के रचनाकारों की विविध विधाओं पर लिखे गए कोंकणी साहित्य का गहन एवं विशद वर्णन किया गया है। इसके साथ ही कोंकणी पत्र-पत्रिकाओं, पुरस्कारों, समारोहों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि का उल्लेख भी हुआ है। प्रस्तुत लेख मुख्यतः वर्ष 2008 के कोंकणी भाषा और साहित्य एवं उससे संबंधित अन्य गतिविधियों पर केन्द्रित है। यहां कोंकणी भाषा साहित्य का विधागत विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है।

कोंकणी काव्य :

भारतीय साहित्य की भांति कोंकणी काव्य की भी एक लंबी परंपरा रही है। गोवा मुक्ति आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का शंखनाद कविताओं के माध्यम से किया गया। जिसका प्रभाव सम्पूर्ण गोवावासियों पर पडा। गोवा मुक्ति के बाद कोंकणी कविता प्रकृति, प्रेम, परिवेश, समाज एवं समसामयिक समस्याओं आदि से जुडी लेकिन इसका जुडाव मन्थर गति से हुआ। दरअसल कोंकणी कविता की विभिन्न प्रवृत्तियों की वास्तविक पहचान गोवा मुक्ति के बाद हुई। इसके बाद ही वह भारतीय काव्यान्दोलनों से प्रभावित होती हुई प्रखरता और तेजस्विता की ओर आगे बढने लगी। वैसे तो कोंकणी कविता लिखने वालों में ढेरों नाम हैं लेकिन यहां मैं विशेष रूप से 2008 में प्रकाशित कवियों की कविताओं का विवचेन और विश्लेषण प्रस्तुत करूंगा।

गोवा मुक्ति के बाद प्रकृति और प्रेम से लदी हुई भाव संवेदनाओं को जिन कवियों ने अपने काव्य में चित्रित किया, उनमें कोंकणी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं साहित्य अकादमी तथा अन्य स्थानीय महत्वपूर्ण पुरस्कारों से पुरस्कृत रमेश भगवंत वेळुस्कार का नाम प्रमुख रुप से आता है। इस वर्ष प्रकाशित ''दर्या'' आपका सातवां कोंकणी काव्यसंग्रह है। प्रस्तुत संग्रह में कुल छोटी-बडी 135 कविताएं हैं, जोकि विशेष रूप से समुद्र से संबंधित नाना विषयों को लेकर लिखी गई है। पानी के महत्व को इन्होंने विभिन्न संदर्भों में व्यक्त किया है। वे समुद्र की वंदना इस प्रकार करते हैं-

तुज्या अशीम
पाणयांतल्यान
पोसोभर समुद्रल्हारां घेवन
हें अर्घ्य
तुकाच ओंपतां.
समुद्रार्पणमस्तु
सागरार्पणमस्तु
दर्यार्पणमस्तु

कवि ने सागर के विभिन्न ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि संदर्भों का गहन एवं विशद उल्लेख करते हुए कविताएं लिखी हैं। कोंकणी में सम्भवत: यह पहला काव्यसंग्रह है, जिसमें कि सागर को केन्द्र में रखकर इतनी कविताएं लिखी गई हैं। वस्तुत: नदी, पहाड, सागर, पेड आदि हमारी सांस्कृतिक परंपरा की विरासत हैं।

अगस्तीन खयं तुका / एका घोंटान पिवन उडयलो
तूं ताच्या पोटांत / आदींचआसलो
हें मात ताणेय केन्ना कोणाक / सांगलें ना
आनी हेरांनीय केन्ना सांगलें ना / घडये तांकां कळळेंच नासत

रमेश वेळुसकर की कतिपय कविताओं में शंकर, पार्वती, हिमालय, समुद्र मंथन आदि पौराणिक संदर्भों के अतिरिक्त लोक जीवन, प्रकृति एवं ऋतुओं के साथ सागर के संबंधों आदि की भाव संवेदनाएं व्यक्त हुई हैं।

आयज हिमालयाच्या
दोंगराळ वलयां सकल
म्हजीं पावलां झंकारतात
तांकां तुज्या ल्हारांनी केल्ल्या
कातुल्यांची याद येता।

साहित्य अकादमी एवं अन्य स्थानीय पुरस्कारों से सम्मानित कोंकणी कविता के दूसरे महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर प्रकाश दामोदर पाडगांवकर का "ब्रह्मांड-योगी चिरंतनाचो" नामक सातवां काव्यसंग्रह (2008) प्रकाशित हुआ। रमेश वेलुस्कार की काव्यसंवेदना से अलग हटकर प्रकाश की कविताएं मूलत: आध्यात्मिक चेतना, जीवन - जगत की क्षणभंगुरता, असतो मा सद गमय... आदि विचार धाराओं से संवेदित हैं। जैसे कि -

एकाच जल्मान दिसता देवा
कितलेशेच जल्म जियेलों
तुजीच कृपा आसली देखून
हांव खंयच्यान खंय पावलों

प्रस्तुत काव्यसंग्रह में कुल 71 कविताएं हैं। उनमें उक्त विषयों के अतिरिक्त 15 आँगस्ट 1947 ची निशाण, मोहम्ममद अली जिन्ना, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, शणै गोंयबाब निर्जन एकोडे राती, शणै गोंयबाब तत्वनिष्ठ 'एकलव्य' आदि नामधारी व्यक्ति विशेष को लेकर लिखी गई हैं। कोंकणी साहित्य का सर्जन कर उसको मान - सन्मान और अस्मिता दिलाने का शणै गोंयबाबने एक एतिहासिक कार्य किया। आज वे कोंकणी काव्य जगत के स्तुत्य एवं प्रेरणास्त्रोत है। प्रकाश पाडगांवकर का उनके प्रति यह भावोद्‌गार कथन की प्रामाणिकता को सिद्ध करता है।

शणै आयज पळय तुज्या सांगाताक
आमचे हात गर्वान मुठी करून
आनी आंगठे उबे आत्मनिर्भर शिटूक
पेलून कसलेंय आव्हान
दवरूंक गिन्यानाच्या साणीर सुगूर
आमकां आत्मसन्मान मेळोवन दिवपी
तुवें शिंपून भरभराटीक हाडिल्लो 'कोंकणी संवसार'

कोंकणी कविता के तीसरे महत्वपूर्ण कवि सु. म. तडकोड के दूसरे ''पांयजेल'' यानी (तस्वीर का ढांचा) काव्यसंग्रह की कविताएं सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुडी हुई है। जिनमें परिवर्तित समाज में बिखरते एवं टूटते हुए नैतिक मूल्यों कें पतन को दर्शाया गया है। इस बात को लेकर कवि बहुत आहत है, फिर आशान्वित है।

म्हळें,
म्हजीय एक फायल आसूं येता...
...गावलीय ती आशीकुशीतली.
उक्ती करून पळयली जाल्यार वाचूंक मेळळे-
- तुजें कर्तुप म्हळ्यार फुफुक्या मनशान

केल्ली

संघर्षरत कवितेची निर्मणी...

कवि का मानना है, प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र किसी न किसी रूप में उसके मानस पटल पर अंकित होता हैं किंतु उसे हम समझ नहीं सकते। मानव जीवन का तात्पर्य संघर्षरत है। जहां कविता की सर्जना होती है। सु. म. तडकोड के बाद प्रा. बाळकृष्ण कानोळकार को कोंकणी कवि और समीक्षक के रूप में जाना जाता है। कानोळकार के ''आदिमायेचे उले'' (आदिमाता की पुकार) काव्य संग्रह में कुल 38 कविताएं हैं, जिन्हें उलोः पयलो से उलोः चवथो के अंतर्गत रखा गया है। ये कविताएं मूलतः गोवा की मिट्टी एवं लोकसंस्कृति, प्रेम, श्रृंगार, रोमानी भावों, सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन को केन्द्र में रखकर लिखी गई हैं।

''मायझंयां, कविता करतसय?
आज्यापणज्यान तरी तुज्या
केल्ली काय रे कॅवां कविता?''
''म्हुणानच मियां करतंय।
बापायसकट आज्यापणज्याक
खापर-खापरपणज्याक, शेणज्याक
'शीरी'ची गाण फोडुंक
येय नस्ली... म्हाकां येता!''

कथाकार, कवि एवं संपादक तुकाराम रामा शेट कोंकणी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। वर्ष 2008 में प्रकाशित उनके ''मनमळब'' काव्यसंग्रह में विभिन्य विषयों से संबंधित कविताएं संकलित हैं। 'सांवळी' नामक कविता में अभिव्यक्त श्रमशील नारी का सौन्दर्य इस प्रकार है।

सकाळी उठून सांवळी
हळू हळू पावलांनी
चलूंक लागता...
हळू लांब लांब चलत सांजवेळा
घोटेरांत झाडां झाडांतल्या
पावल दवरता
पदर वोडून सांवळी
काळी काळी रात
जावन येता...

कोंकणी कविता के युवा कवि सुदेश शरद लोटलीकार ने 1990 से काव्य लेखन की शुरुआत की। अभी तक उनके दो मराठी और दो कोंकणी काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कवि को स्थानीय कोंकणी एवं अन्य कला संस्थाओं द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। ''एकांतार्ची उतरां'' 2008 में प्रकाशित उनका दूसरा काव्यसंग्रह है। उसमें उन्होंने जीवन - जगत के विभिन्न विषयों को स्पर्श किया है। सुख-दुःख मानव जीवन के साथ चिरकाल से जुडा हुआ है।

दुख्खाचे हुनसाणेर / सुखाची साय
जिणेचो पेलो / ओठांक लाय...
एकांत / सुखाचें देणें
एकटेपण / एक दुखणें...

सुदेश लोटलीकार के अतिरिक्त दूसरे युवा कवि संजीव वेरेंकार बालगीत के लिए जाने जाते हैं। अभी तक उनके तीन कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ''पडवेवयलीं संवणी'' (2008) चौथा बालगीत संग्रह है।

यह मूलतः पशु-पक्षियों और जानवरों के ऊपर लिखी गई हैं।

म्यांव म्यांव म्यांव
बिलूबाय आमचें
खुबूच बाये मस्तें
दूदू खावंक ल्हेवटें

संपादक. प्रा. भालचंद्र गांवकार ने गोवा के वरिष्ठ एवं युवा कुल 25 कवियों की प्रमुख कविताओं का एक काव्य संकलन ''काव्यफुलां'' नाम से प्रकाशित किया। जिनमें नागेश करमली, माधव बोरकर, रमेश वेळुस्कार, शंकर रामाणी, प्रकाश पाडगांवकार, जेस फेर्नांदीश, गजानन रायकर, जे. बी. सिक्वेरा, युसूफ शेख, आनंद वर्टी, माया खरंगटे, नुतन साखरदांडे, निलबा अ. खांडेकर, राजय पवार, पूर्णानंद च्यारी, हनुमंत चोपडेकार आदि हैं।

गोवा में आज भी क्रिस्ती समाज द्वारा कोंकणी साहित्य रोमन लिपि में लिखा जा रहा है। रोमन लिपि को शिक्षा एवं राजकाज की भाषा बनाने पर जोर दिया जा रहा है। वालतर मेनेझेज (Walter Menezes) का रोमन लिपि में जोयत आनी हेर कोविता (Zoit ani her kovita) नामक 61 पृष्ठों का काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ। 'काल राती' कविता की कतिपय पंक्तियां द्रष्टव्य हैं।

Kal rati...

Foddli hanvem kott' tti moji

Hanv bhikari nhoi

Naka mhaka bhik tumchi

काव्य लेखन की दिशा में कोंकणी कविता विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों को आत्मसात कर भारतीय भाषाओं की मुख्यधारा से जुडकर आगे बढने का प्रयास कर रही है। सूर्या अशोक ने अपनी ''अमृतवाणी'' नामक रचना में नामदेव, ज्ञानदेव, कबीर, सूरदास, एकनाथ, तुलसीदास, पूंतानम नंपूतिरी, रहीम, तुकाराम की वाणियों का कोंकणी भाषा में अनुवाद कर संकलित किया है। ब्राजिन्हों सोरेस कालापुरकार ने ''मोतियां'' में विविध प्रसंगों पर आधारित अपने मनोभावों को दोहों और शेर के माध्यम से रोमनलिपि में व्यक्त किया है।

Ful fulon aplo pormoll ani sobitai dita

Vat apunn koddon dusreak uzvadd haddta.

कथा साहित्य :

कोंकणी तथा साहित्य को समृद्ध एवं लोकप्रिय बनाने में चंद्रकांत केणी, पुण्डलिक ना. नायक, दामोदर मावजो, महाबलेश्वर सैल, उदय भेम्ब्रे, एन. शिवदास, हेमा नायक, जयंती नायक, मीना काकोडकर, भिकाजी

घाणेकर आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इस वर्ष उदय शेणवी के ''घारू'' और ''मूळनक्षत्र'' नामक दो उपन्यास प्रकाशित हुए। जोकि घर-गृहस्थी के जीवन पर आधारित है। भिकाजी घाणेकार का ''भलायकी एक गिरेस्तकाय'' नाम से 100 कहानियों का कथासंग्रह प्रकाशित हुआ। उसमें भुरग्यांची भलायकी, कंप्युटर, टीव्ही, 'फास्ट फूड'करता, शास्त्रीय संगीत, प्राण वायु, भुरग्यांचे दांत, कुटुम्ब कल्याण, बर्ड फ्ल्यू वासीन, बायलांक बरी खबर, सोयाबीन, टी. बी. चीं वखदा आदि विभिन्न विषयों पर छोटी - छोटी कहानियां संकलित हैं। रा. ग. गावडे का दया माया, अश्वत्थ, लज, बांयतलो, गर्व, देडशाणो, नीत, गुलाम, बोकडेकार, भेसड शीर्षक से कुल दस कहानियों का ''युवा कथा'' नामक कथासंग्रह प्रकाशित हुआ। ये कहानियां मूलतः नीति, धर्म त्याग, बलिदान आदि मानवीय मूल्यों से प्रेरित बच्चों और युवाओं को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। कतिपय कहानियों में अमानवीय पक्षों की निंदा की गई हैं।

आज भूमंडलीकरण के दौर में एक प्रकार की वैश्विक संस्कृति का निर्माण हो रहा है, जिसमें अनुवाद का महत्व दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा है। साहित्य अकादमी जैसी कई संस्थाएं एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा में लाने का कार्य कर रही है। गोवा कोंकणी अकादमी भी इस दिशा में अच्छा कार्य कर रही है। कोंकणी कथाकार नरेन्द्र कामत ने बांग्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चटर्जी के ''मदली भयण'' (मझली बहन), ''अबुद्धी'' और ''बिंदूलो बाबू'' नामक तीन उपन्यासों का अनुवाद कोंकणी भाषा में किया है। रमेश घ. लाड ने मूल कन्नड लेखक कस्तुरी मोहन पै के कन्नड उपन्यास ''ध्रुवतारे'' का कोंकणी में अनुवाद कर प्रकाशित किया है। कामिलो एफ मेनेझेज की आठ कहानियों का "Noxibant nirmilelem" kothajhelo नाम से मूल संग्रह रोमन लिपि में आया। गोवा की जानी - मानी लोक कथाकार जयंती नायक की ''वेंचिक लोक कहानियां" (Venchik Lok-kannio) का अनुवाद फेलिसियो कारदोज (Felicio Cardozo) ने रोमन लिपि में किया हैं।

नाट्य साहित्य :

गोवा नाटक की भूमि है। यहाँ आज भी कोंकणी और मराठी की नाट्य स्पर्धाएं वर्ष में एक बार जरूर की जाती है। जिसमें सम्पूर्ण गोवा के विभिन्न ग्रामांचलों से नाट्य मंडलियां भाग लेती हैं। यह नाट्य प्रतियोगिता बडे व्यापक स्तर पर की जाती है। इस वर्ष वसंत पांडुरंग नाडकर्णी का रामायण की कथा पर आधारीत ''कांचनमृग... कांचनमृग'' नामक तीन अंकों का नाटक प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व इनके चार नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. चन्द्रशेखर शेणई ने उसका प्रथम मंचन 30 नवम्बर 2003 को डॉ. भालेराव नाट्यगृह, साहित्य संघ, गिरगांव में बडी कुशलता से किया। नरेन्द्र का. कामत का तीन अंकों का ''संगीत कोंकणी नाटक वाकडे म्हेडीक वाकडें नेम'' नामक गांव के भाटकार जीवन से संबंधित आया। ''आडकात्रिंतुलें फोप्पळ'' शीर्षक से होसाड बाबुटि नायक का नाटक प्रकाशित हुआ।

युवा नाटककार एवं कवि प्रा. राजय पवार का ''डरने का नाय'' चौथा नाटक है। यह मूलतः हास्यप्रधान विनोदी नाटक है। जिसमें एक परिवार के अंतर्गत पति को डरपोक, भीरू और पत्नी को सबला और हिम्मती दिखाया गया है। धिरू अपने घर में चोरी करने वाले चोर के प्रति हमदर्दी व्यक्त करता है, जिससे चोर का

हृदय परिवर्तन हो जाता है। इसी क्रम में बाबा प्रसाद के दो अंकों का विनोदी नाटक ''मेलो उल्लो एकूच'' और ''दोबरात पयशे'' आया। ये दोनों नाटक मनोरंजन पूर्ण हैं। दूसरा मनोरंजन पूर्ण दो अंकों का 28 मार्च 2007 को मंचित नारी विषयक नाटक ''आत्या, आत्या सून कर'' महेश चंद्रकांत नाईक का आया।

गोवा में तियात्र की एक लंबी परंपरा रही है। समय - समय पर यहां तियात्र खेले जाते हैं और तियात्र पर बहुत सारे ग्रन्थ प्रकाशित हुए है। उनमें से Baroupi Menino Mario Arjaujo का "Lok Nit," Tiatr pustok Rupan और CEZAR D' MELLO का Kalliz Ostorechem नामक तियात्र रोमन लिपि में प्रमुख है। तियात्र के जाने माने लेखक मिनीन मारियो आरावजो की आठ पुस्तकें तियात्र पर प्रकाशित हो चुकी हैं। हेर गाजलेले तियात्र के अंतर्गत ''भाड्याचो कुसवो'' सात अंकों का दूसरा तियात्र है। इसके अतिरित तरसाद, आत्म-धन, लोकगीत, एयर होस्टेज आदि हैं।

गोवा में रमेश भगवंत वेळुस्कार का नाम प्रमुख रुप से कवि के रुप में जाना जाता है, लेकिन वे एक अच्छे कथाकार, नाटककार और अनुवादक भी हैं। वेळुस्कार को कोंकणी के अतिरिक्त हिंदी एवं अन्य भाषाओं की अच्छी जानकारी है। वे हिंदी भाषा में काफी रुचि रखते हैं। उन्होंने धर्मवीर भारती के अंधायुग का कोंकणी में अनुवाद कर उसका सफल मंचन भी किया है। वर्ष 2008 में वेळुस्कार ने महाभारत की कथा पर आधारित संस्कृत नाटककार भास के ''उरुभंग'' और भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रसिद्ध नाटक ''अंधेर नगरी'' का कोंकणी में अनुवाद किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने श्री. अरविन्द के 'एरीक' अंग्रेजी नाटक का अनुवाद कोंकणी भाषा में किया है।

निबंध एवं समीक्षा साहित्य :

गोवा में कोंकणी निबंधकार के रूप में साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त रवीन्द्र केळेकार का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है। विद्या पई ने केळेकार के 42 कोंकणी निबंधों का अंग्रेजी में अनुवाद Keleidscope नाम से किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त लोक कथाकार, अनुवादक जयंती नायक के दो कथासंग्रह बारह लोकवेद एवं छः बालसाहित्य की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतरिक्त ढेरों लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। अभी भी वे निरंतर सर्जन रत है। इस वर्ष उनका ''लोकरंग'' एवं ''लोकमंथन'' नाम से लोकवेद निबंधसंग्रह की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई। प्रथम संग्रह में लोकजीवन की संस्कृति पर आधारित कुल दस निबंध हैं। दूसरी पुस्तक में लोकवेद से संबंधित कुल आठ निबंध हैं। उन्होंने इसमें गोवा के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक जीवन का गहन अध्यन एवं मंथन किया है। जयंती नायक के 'गर्जन' और साहित्य अकादमी से पुरस्कृत 'अथांग' कथा साहित्य पर गोवा के प्रमुख रचनाकारों ने अपनी समीक्षाएं लिखी हैं। इन समीक्षाओं का संकलन और संपादन अवधूत आमोणकर ने ''जयंती कथा आस्वाद आनी समिक्षा'' नामक पुस्तक में की है। इस वर्ष बालकृष्ण कानोळकार की ''क्षः समिक्षेंतलो'' की समीक्षा पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें मूलत कोंकणी रचनाकारों, समीक्षकों की महत्वपूर्ण कृतियों का परीक्षण उनके अनुभूति और अभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर किया गया है।

अन्य साहित्य :

कोंकणी साहित्य की अन्य विधाओं में कई रचनाकारों ने कोंकणी, मलयालम, कन्नड एवं अन्य भाषाओं के महत्वपूर्ण रचनाकारों की जीवनियां लिखी है। श्रीनिवास कामत ने कोंकणी भाषा, साहित्य के जनक वामन रघुनाथ वर्दे वलावलीकार यानी शणै गोंयबाब के जीवन, साहित्य एवं उनके कार्य के विषय में कोंकणी से अनुवादित अंग्रेजी में Shenai Goembab, The Man and his work और For the Konkani (Konkani Vidhyarthyank) नामक दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं। एल. सुनिता बाई ने कन्नड भाषा के प्रथम राष्ट्र कवि गोविन्द पै के जीवन और साहित्य को कन्नड से कोंकणी में अनुदित कर ''महाकवि गोविन्द पै'' नाम से प्रकाशित किया है। कन्नड की जिस पुस्तक का अनुवाद सुनिता ने कोंकणी में किया है, उसके मूल लेखक कय्यार किंअण्ण रै है।

मानव जीवन का संगीत से बहुत गहरा संबंध है। इसके अंतर्गत गीत, नृत्य, वाद्य तीनों का समावेश होता है। भारत जैसे विशाल देश में हर प्रान्त का अपना लोकसंगीत होता है। संगीत में वाद्य यंत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिससे कि संगीत अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। वाद्य यंत्रों में तबला एक विशिष्ट वाद्ययंत्र है। कोंकणी संगीतकार श्रीधर बर्वे ने ''तबलें'' 213 पृष्ठों की पुस्तक के माध्यम से उसके विभिन्न स्वरुपों की विस्तृत एवं गहन जानकारी दी है।

संगीत के साथ - साथ मनुष्य जीवन के लिए भक्ति का भी सर्वोपरि महत्व है। भक्ति के द्वारा हमारे चित्त का परिमार्जन होता है। वह मानवीय बुराइयों को दूर कर हमारे जीवन को सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित बनाती है। गणपती ल. दांडेकार ने ''श्रीनारदभक्तिसूत्राणि'' का ''श्रीनारदाचीं भक्तिसूत्रां'' नाम से कोंकणी में अनुवाद किया है। प्रस्तुत पुस्तक का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा एवं पांचवां अध्याय क्रमशः भक्तिचें महत्व, भक्तिची परिभाषा-वळख, भक्ती साधपाची साधनां, शुद्ध आनी संमिश्र भक्ति, सिद्धिचो लाभ शीर्षक में विभाजित है।

संगीत, भक्ति के साथ जीवन में चिकित्सा का महत्वपूर्ण स्थान है। संसार में सभी धर्म शरीर के लिए हैं। डॉ. उमानाथ राताबोली ने ''स्टेथोस्कोप'' (वैजिकी) नाम से कोंकणी में पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक के पहले से छठें अध्याय के शीर्षक क्रमशः वैजिकी सोद, आहार-अन्न-पोषण, वखदां आनी उपाय, बरी भालयकी, व्याधी आनी अनारोग्य और सरभरस हैं। मानव जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए इसमें नाना प्रकार के सुझाव दिए गए हैं। वैद्यिकी पर दूसरी अनुपमा कुडचडकार की ''कांत कातीची जतनाय आनी दुर्येसां'' नाम से आई, जिसमें विभिन्न रोगों एवं उनके उपचार की जानकारी दी गई है।

पत्र - पत्रिकाएं -

गोवा सूचना, तकनीकी और मीडिया विस्फोट के युग में निरंतर आगे बढ रहा है। पर्यटक स्थल होने के कारण यहां विभिन्न भाषा-भाषी लोग रहते है। अंग्रेजी और मराठी भाषा का प्रभाव होने के कारण गोवा में इन भाषाओं में दैनिक पत्रों की संख्या अधिक है। अभी भी गोवा से एक मात्र दैनिक ''सुनापरान्त'' पणजी

से प्रकाशित होता है। कोंकणी पत्रिकाओं में ''जाग'' (मासिक) संपादक प्रा. माधवी सरदेसाय का विशिष्ट स्थान है। यह विगत 35 वर्षों से कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन की दिशा में स्तुत्य कार्य कर रही है। इसमें कोंकणी की कहानी, कविता, विभिन्न विधाओं पर समीक्षा लेख एवं विशेषांक प्रकाशित होते रहते हैं। कोंकणी की दूसरी मासिक पत्रिका ''बिंब'' का प्रकाशन दिलीप बोरकार के संपादकत्व में विगत आठ वर्षों से हो रहा है। यह भी कोंकणी की विभिन्न विधाओं एवं अन्य समसामयिक प्रसंगों पर आधारित है। गोकुलदास प्रभु के संपादन में ''ऋतु'' नामक कोंकणी कविता की त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन सफलता पूर्वक किया जा रहा है।

स्वर्गीय चन्द्रकांत केणी के संपादकत्व में ''कुळागर'' नाम की त्रैमासिक पत्रिका विगत 25 वर्षों से निकल रही थी।

अभी उसके संपादक का भार श्री दिनेश मणेरीकर निभा रहे हैं। संपादक तुकाराम शेट ''कोंकण टायम्स'' नाम की त्रैमासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। इस पत्रिका का प्रकाशन विगत 30 वर्षों से हो रहा है। यह विभिन्न विधाओं की पत्रिका है। रोमन लिपि में फाडस्टो डि - कोस्टा के संपादन में ''गुलाब'' नाम की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। इसका प्रकाशन पिछले 27 वर्षों से हो रहा है। इनके अतिरिक्त ज़ैत, शोध, उर्बा, बारदेश, चवथ आदि अन्य कोंकणी की पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। इन पत्रिकाओं में कोंकणी भाषा और साहित्य के अतिरिक्त यहां की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेशगत हलचलों की अनुगूंज भी समाहित होती है। गोवा के अतिरिक्त कर्नाटक और केरल से भी कोंकणी की अन्य लिपियों में भी पत्रिकाएं निकल रही है। गोवा कोंकणी अकादमी, कोंकणी भाषा मंडल, मडगांव और राजीव कला मंदिर फोंडा ने 10-11 फरवरी 2007 को आठवां युवा साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में कोंकणी की विभिन्न विधाओं में जिन युवा लेखकों ने पुरस्कार प्राप्त किया, उनकी रचनाओं को संकलित कर एवं सम्मेलन की विस्तृत रपट को प्रा. हनुमंत चोपडेकार ने ''युवाकूंर - 2008'' शीर्षक से प्रकाशित किया।

पुरस्कार :

गोवा के वयोवृद्ध कोंकणी साहित्यकार, मनीषी, चिंतक श्री रवीन्द्रबाब केळेकार को उनके सम्पूर्ण साहित्यिक योगदान के लिए वर्ष 2008 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वैसे तो उन्हें साहित्य अकादमी के अतिरिक्त कई अन्य स्थानीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कारों से विभूषित किया जा चुका है लेकिन गोवा में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले श्री रवीन्द्रबाब पहले कोंकणी रचनाकार हैं, जिन्हें यह गौरव प्रदान हुआ है।

श्री अशोक कामत को वर्ष 2008 का साहित्य अकादमी का पुरस्कार उनके ''घणाघाय नियतीचे'' उपन्यास के लिए दिया गया। साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार श्री. एन. पुरुषोत्तम मल्ल्या कोच्चि को उनकी ''तिरुकुरळ'' मलयालम रचना का कोंकणी में अनुवाद के लिए मिला। इस वर्ष गोवा कला अकादमी

का साहित्य पुरस्कार तुकाराम शेट को तथा गोमंतर शारदा पुरस्कार लॅम्बर्ट मास्कारेहन्स को प्रदान किया गया।

अन्य गतिविधियां :

गोवा में गोवा कोंकणी अकादमी, कोंकणी भाषा मंडल, गोवं कला अकादमी, आई. एम. बी. फादर तोमास स्टिवन्स कोंकणी केन्द्र आदि संस्थाएं पूरे वर्ष भर विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमोंद्वारा कोंकणी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के संवर्धन हेतु निरंतर कार्य कर रही है। कोंकणी भाषा मंडल प्रत्येक वर्ष जनवरी में गोवा राज्य स्तर पर युवा महोत्सव एवं गोवा कोंकणी अकादमी युवा साहित्य सम्मेलन, कोंकणी नाट्य स्पर्धा, कोंकणी परिसंवाद, कोंकणी पुस्तकों का लोकार्पण आदि कार्यक्रमों का आयोजन करती है । कोंकणी भाषा मंडल मडगांव ने कला एवं संस्कृति निदेशालय, गोवा सरकार के सहयोग से व्याख्यान माला के अंतर्गत गोवा के स्वर्गीय कवि, चिंतक, मनीषी प्रो. मनोहरराय सरदेसाय के जीवन और साहित्यिक योगदान पर जानेमाने फिल्म निर्माता निर्देशक गुलजार के व्याख्यान का आयोजन किया।

वस्तुतः गोवा कोंकणी अकादमी कोंकणी भाषा और साहित्य के विकास के लिए पूरे वर्ष भर अपनी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती है। जैसे कि कोंकणी की प्रथम पुस्तक के प्रकाशन हेतु 75% एवं उसके बाद की पुस्तक के लिए 50% तथा पुनर्मुर्दित पुस्तक के हेतु अनुदान धनराशि का योगदान प्रकाशकों को प्रोत्साहित करने के लिए कोंकणी पुस्तकों की खरीदारी इस योजना के अंतर्गत अकादमी ने लगभग 40 पुस्तकों की 50 अथवा 100 प्रतियां खरीदीं। अकादमी ने कोंकणी शब्दसागर के आठ खण्डों का निर्माण किया. जिसमें रोमी-कोंकणी, विज्ञान/तकनीकी शब्दावली कोश का भी समावेश है। कोंकणी अकादमी सम्पूर्ण गोवा में स्थित विभिन्न शिक्षा संस्थाओं एवं अन्य संस्थाओं को कोंकणी भाषा, साहित्य और शिक्षण की दिशा में सराहनीय कार्य के लिए पुरस्कृत करती है। अकादमी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी. एच. डी. छात्रों को उनके अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति भी देती है। संस्था बालसाहित्य एवं कोंकणी में अनुदित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अनुदान प्रदान करती है। अकादमी ने 22/01/2008 से 26/01/2008 तक कोंकणी नाटक महोत्सव का आयोजन किया, जिसमें चार कोंकणी नाटक और एक तियात्र को प्रमाण-पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। कोंकणी तियात्र पुस्तक के प्रकाशन हेतु अकादमी 75% आर्थिक अनुदान देती है। 21/02/2008 को कोंकणी संगीत के आयोजन हेतु उसने 20,000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। 16-17 फरवरी 2008 को अकादमी ने पिलार महाविद्यालय में युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। गोवा विश्वविद्यालय के कोंकणी विभाग की प्रपाठक डॉ. माधवी सरदेसाय इस सम्मेलन की अध्यक्ष थीं।

कोंकणी अकादमी उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, पुस्तक प्रदर्शनियों, कोंकणी राष्ट्रमान्यता दिवस, कोंकणी राजभाषा दिवस आदि का आयोजन करती रहती है। ●●●